B.A. History
Part: I / Paper: I

By: DR. ANAND KUMAR SINGH, ASSISTANT PROF., DEPT. OF HISTORY, JAWAHAR LAL NEHRU COLLEGE, DEHRI-ON-SONE

TOPIC: ऋग्वैदिक कालीन आर्थिक स्थिति

ऋग्वैदिक कालीन समाज मुख्यतः ग्रामीण था। आर्यों का आरम्भिक जीवन मुख्यतः पशुचारण का था, कृषि उनका गौण धन्धा था।

ऋग्वेद में फाल का उल्लेख मिलता है। उनके जीवन का मूलभूत आधार कृषि एवं पशुपालन था। कृषि योग्य भूमि को उर्वरा अथवा क्षेत्र कहा जाता था। ऋग्वेद में गव्य एवं गव्याति शब्द चारागाह के लिए प्रयुक्त किया गया है।

वास्तव में आर्यों की आर्थिक स्थिति का मूलाधार पशुधन 'गाय' मुद्रा की भांति समझी जाती थी। अधिकांश लड़ाइयां गायों के लिए लड़ी गई थी इसके अलावा भूमि निजी सम्पत्ति नहीं होती थी। उस पर सामूहिक अधिकार था। ऋग्वेद में बढ़ई, रथकार, बुनकर, चर्मकार कुम्हार आदि शिल्पियों के उल्लेख मिलते हैं।

बढ़ई सम्भवतः शिल्पियों की सुरक्षा होता था। तांबे एवं कांसे के अर्थ में अयस् शब्द के प्रयोग से प्रकट होता है कि उन्हें धातुकर्म की जानकारी थी। परन्तु व्यापार के अस्तित्व के कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता है।

ऋग्वेद में उल्लिखित समुद्र शब्द मुख्यतः जलराशि का वाचक है। व्यापार पणि नामक लोगों के हाथों में था। व्यापार वस्तुतः वस्तु विनिमय द्वारा होता था। ऋग्वेद में हमें किसी ऐसे कर्मचारी का पता नहीं चलता जो कर संग्रह का काम करता हो। सम्भवतः प्रजा राजा को उसका अंश स्वेच्छा से देती थी जिसका नाम बलि था।

ऋग्वेद काल में दास प्रत्यक्षतः खेती के काम में या अन्य उत्पादनात्मक कार्य में नहीं लगाए जाते थे। विनिमय के माध्यम के रूप में निष्क का भी उल्लेख हुआ है।

ऋग्वेद के अनुसार खेती के लिए हल द्वारा भूमि को जोतने की शिक्षा सर्वप्रथम अश्विनों द्वारा दी गई।

इस काल में ऋण प्रथा का भी प्रचलन था। बेकनाट (सूदखोर) वे ऋणदाता थे जो बहुत अधिक ब्याज लेते थे। गविष्टि अर्थात् गायों की गवेषणा ही युद्ध का पर्याय माना जाता था। इसी प्रकार गवेषणा, गोषु, गव्य, गम्य आदि सभी शब्द युद्ध के लिए प्रयुक्त होते थे। पशु ही सम्पत्ति का मुख्य अंग और मूलतः दक्षिणा की वस्तु समझे जाते थे। लोग पणियों से डरते थे क्योंकि वे मवेशियों के चोर होने के अतिरिक्त पशु सम्पत्ति की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध भी थे। रयि (सम्पत्ति) की गणना मुख्यतः मवेशियों से ही होती थी। घोड़ा आर्य समाज का अति उपयोगी पशु था। अन्य जानवर थे - हाथी, ऊँट, बैल, भेड़, बकरी, कुत्ते आदि। ऋग्वेद में एक ही अनाज अर्थात यव का उल्लेख हुआ है।

ऋग्वेद संहिता के मूल भाग कृषि के महत्त्व के केवल तीन ही शब्द प्राप्त हैं, ऊर्दर, धान्य एवं सम्पत्ति। ऋग्वेद में कृषि सम्बन्धी प्रक्रिया से सम्बन्धित उल्लेख चतुर्थ मण्डल में मिलता है।